SWETA DUBEY
ASST.PROFESSOR,
GSCW B.Ed., PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT ECONOMICS,SEM-2, PAPER-VII A UNIT-I
TOPIC- FUTURISTIC POINT OF VIEW ON OBJECTIVES OF ECONOMICS SUBJECT PART-II

Scanned with CamScanner

शिक्षा का प्रत्येक अंग किसी न किसी मूल्य को परिवर्तनशील करता है । अर्थशास्त्र द्वारा हम क्या उपलब्ध करना चाहते हैं, यह प्रश्न मूलत: आर्थिक मूल्य विषयक प्रश्न है । वे कौन से आदर्श हैं, जो वर्तमान समय में समाज की आर्थिक क्रियाओं से सबन्धित है । अर्थशास्त्र शिक्षण द्वारा उन्हीं मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए ।

उपनिषदों नें दो प्रकार के मूल्यों की चर्चा की गई है- चिरन्तन मूल्य तथा परिवर्तनशील मूल्य । चिरन्तन मूल्य आनन्द की अनुभूति है । दूसरी ओर तात्कालिक मूल्य है जो देश काल सापेक्ष होते हैं । जो चिरन्तन मूल्य की प्राप्ति में सहायक होते हैं । वास्तव में चिरन्तन मूल्य साध्य है तथा तात्कालिक मूल्य साधन ।

Scanned with CamScanner

तैतिरीय उपनिषद् में आनन्द प्राप्ति के पाँचों सोपानों को देखें तो अन्नमय कोष एवं प्राणमय कोष अन्न प्राप्ति के उपाय तथा सस्थ जीवन के निर्माण के सोपान हैं । मनोमय एवं विज्ञानमय कोष मन एवं बुद्धि के प्रयोग द्वारा ज्ञान का संचयन एवं विवेकपूर्ण उपयोग से संबन्धित हैं । पंचम सोपान आनन्दमय कोष इन सभी से ऊपर हैं, जब ज्ञाता, ज्ञेय एवं ज्ञान में भेद नहीं रह जाता ।

इसमें अन्तिम सोपान तक पहुँचते-पहुँचते पूर्व सोपानों का परिहार नहीं होता, अपितु उनका विलीनीकरण हो जाता है । अत: तात्कालिक मूल्य का उपयोग चिरन्तन मूल्य की प्राप्ति के लिए किया जायेगा । तात्कालिक मूल्य साधन है तथा चिरन्तन मूल्य साध्य है । यदि तात्कालिक मूल्य ही साध्य हो जाये, तो उन्नति का मार्ग अवरूद्ध हो जायेगा । अत: शिक्षा द्वारा इस सम्बन्ध में विवेक जाग्रत करना आवश्यक है ।

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र शिक्षण के द्वारा विवेक जाग्रत करने का यह कम इस प्रकार सुदृढ़ किया जा सकता है -

प्रथम दो कोषों में भौतिक संमपन्नता एवं स्वस्थ शरीर की बात कही गई है । अर्थशास्त्र के शिक्षण द्वारा किसी शक्ति को व्यवसायोंमुखी शिक्षा, आर्थिक क्रियाओ, सिद्धान्तों एवं कारकों की शिक्षा, कारण-प्रभाव संबंध, साधनों का उपयोग विशेष रूप से मानव संसाधन पर ध्यान आकर्षित किया जायेगा, जिससे छात्रों में गुणात्मक जीवन के लिए आकर्षण बढ़े । जीवन स्तर सुधारने का प्रयास करे किन्तु केवल साधन रूप में, साध्य रूप में नहीं । लोभ-मोह से परे श्रेष्ठ को पहचानने व प्राप्त करने का प्रयास करे । भोजन स्वास्थ्य लाभ के लिए स्वाद के लिए नहीं । पुष्ट शरीर अच्छी तरह कार्य करने के लिए किसी को पीड़ा देने के लिए नहीं । श्रेयस एवं प्रेयस में भेद करे । मनोमय कोष में दृश्य जगत का ज्ञान एक सच्चे नागरिक का जीवन बिताने के लिए शोषण के लिए नहीं । वर्तमान समय में इस ज्ञान पर ही दुनिया अटक गई है । आज अच्छी आर्थिक नागरिकता के गुणों का विकास परम आवश्यक हो गया है । रात-दिन के घोटाले व काण्ड इन मूल्यों के अभावों का ही परिणाम है । बुद्धिमय कोष द्वारा बुद्धिगम्य ज्ञान प्राप्त करने की बात कही गई है । बुद्धि का प्रयोग वास्तविक स्थिति ज्ञात करने के लिए हो, विशद या कुतर्क करने के लिये नहीं । विधिवत कर कैसे चुकाये, इसमें न्यायसंगत निवेश कर लाभ प्राप्त कर सकें, इसमें बुद्धि लगाएँ । सरकार को कैसे धोखा दे, कर न देना पड़े, इस कृत्य में नहीं ।

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र में इस प्रकार के मूल्यों का शिक्षण कर वास्तविक आनन्दमय जीवन व्यतीत करने का तरीका सिखाया जा सकता है । इससे अच्छी आर्थिक नागरिकता के मूल्यों का आध्यात्मकीकरण हो जाता है । समग्र जीवन विवेक से युक्त हो जाता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपनिषद् कालीन मूल्यों की सार्थकता आज भी है । यदि अर्थशास्त्र के शिक्षण में ध्यान दिया जाये तो यह शक्ति एवं समाज दोनों के भविष्य के लिये मंगलकारी सिद्ध होगी ।

Scanned with CamScanner